को अनेक प्रकार की समस्याएं होती है और नागरिकों को इन समस्याओं से प्रभावित होना स्वाभाविक है।

औद्योगिक समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र (Scope of Industrial Sociology)

(b)

औद्योगिक समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र आधुनिक समय में काफी व्यापक हो गया है। औद्योगिक समाजशास्त्र के अन्तर्गत सभी प्रकार के औद्योगिक संगठन आते हैं। उद्योगों की बढ़ती संख्या के कारण इसका क्षेत्र काफी बढ़ गया है तथा भविष्य में और भी बढ़ने की संभावना है। औद्योगिक समाजविज्ञान का क्षेत्र विभिन्न विद्वानों के द्वारा दी गयी परिभाषाओं के आधार पर ही निर्धारित किया जा सकता है, जिसमें कुछ प्रमुख विद्वान क्रमशः **नासो** एवं **फार्म**, **वेर्न्स** एवं **स्नाइडर** हैं। इन लोगों ने औद्योगिक समाजशास्त्र के क्षेत्र को स्पष्ट शब्दों में वर्णित किया है।

नासो तथा **फार्म** (Nasoue and Form) ने इसके अध्ययन क्षेत्र की व्याख्या करते हुए कहा 'व्यावसायिक समाजविज्ञान', औद्योगिक समाजविज्ञान की एक उपशाखा हो सकती है, जो एक स्वतन्त्र उपक्षेत्र को निर्मित करती है।'

नासो और **फार्म** ने व्यावसायिक समाजविज्ञान को औद्योगिक समाजविज्ञान की एक उपशाखा माना है। इन विद्वानों के अनुसार व्यावसायिक समाजविज्ञान के मुख्य पांच भाग हो सकते हैं, जिनका अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है। नासो और फार्म ने व्यावसायिक समाजविज्ञान के जो पांच भाग बतलाये हैं, वे निम्न हैं–

(अ) कार्य की सामाजिक प्रकृति (Social Nature of Work) और इससे सम्बन्धित घटनाओं का अध्ययन। जैसे आराम, अवकाश और बेरोजगारी आदि।

(आ) व्यक्तिगत व्यवसायों का अध्ययन (Study of Individual Occupations)।

(इ) व्यावसायिक समाजविज्ञान के तीसरे भाग में इसका विश्लेषण किया जाता है कि किस प्रकार व्यावसायिक संरचना और व्यक्तिगत व्यवसाय सामाजिक संरचना के अन्य पक्षों से सम्बन्धित होते हैं।

Scanned with CamScanner

(ई) व्यावसायिक ढांचे का विश्लेषण (Analysis of Occupational Structure)।

(उ) एक विशेष व्यवसाय का सामाजिक सदस्य के रूप में अध्ययन।

बर्न्स (Burns) ने औद्योगिक समाजविज्ञान के क्षेत्र को निम्न भागों में विभाजित किया है–

(1) नौकरशाही व्यवहार पर आधारित मजदूरों की प्रवृत्तियों और व्यवहारों का अध्ययन।

(2) कार्यों का अध्ययन करना। इसकी सहायता से कार्यों की माँग, कार्य करने की दशाओं ओर कार्य करने के उद्देश्यों के बीच सन्तुलन स्थापित किया जाता है।

(3) उन समूहों का अध्ययन करना जो कार्य करते हैं। साथ ही कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ प्रबन्धकों के व्यवहारों का अध्ययन करना।

(4) औद्योगिक सम्बन्धों का विश्लेषण करना। इसके अन्तर्गत श्रमसंघों का ऐतिहासिक विकास, सौदेबाजी की व्यवस्था तथा श्रमसंघों के प्रकारों का अध्ययन किया जाता है।

(5) उद्योगवाद का व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययययन।

नासो और फार्म के अतिरिक्त अन्य विचारकों ने भी औद्योगिक समाजविज्ञान के क्षेत्र का निर्धारण किया है। इन विचारकों में श्री स्नाइडर (Shri Snider) का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। स्नाइडर ने औद्योगिक समाजविज्ञान के क्षेत्र का निर्धारण अच्छे ढंग से किया है। उनका कहना है कि समाजविज्ञान विशेष विज्ञान है और इस रूप में यह ऐसे अनेक क्षेत्रों की विवेचना करता है, जिनको अधिकांश विद्वान भुला देते हैं। इसके साथ ही समाजविज्ञान में ऐसे अनेक तत्वों का अध्ययन किया जाता है जिनको अन्य विज्ञान अपने परिधि के बाहर मानते हैं। उदाहरण के लिए कारखानों में औपचारिक समूह को ठीक उसी प्रकार समझा जाता है जैसे बाहर के समाजों में छोटे समूहों की स्थिति होती है। इसका परिणाम यह होता है कि समूहों से उसी प्रकार का व्यवहार भी किया जाता है। एक समाज वैज्ञानिक किसी कारखाने के औद्योगिक सम्बन्धों का गम्भीरता से अध्ययन करता है।

औद्योगिक समाजशास्त्र का महत्व

Scanned with CamScanner